Sub- History of Indian Sculpture-

मीनाक्षी मन्दिर - यह मन्दिर शिव मन्दिर के आंगन के दक्षिण में अवस्थित है। और शिव मन्दिर से आकार में लगभग आधा है। इसमें एक कक्ष के अन्दर दुसरा कक्ष निर्मित है। इसके बाह्य भाग की लम्बाई 225 फीट तथा चौड़ाई 150 फीट है। इसमें दो गोपुरम है। पूर्व का गोपुरम पश्चिम के गोपुरम से छोटा है। मीनाक्षी मंदिर की छत की चपटी एक शिखर से सुशोभित है। यहां देवी के आकर्ण निमीलित नेत्र की उपमा मछली की आंखो से की गयी है। इसी कारण इसे मीनाक्षी की संज्ञा से अभिहित किया गया।

यहां पर चतुर्दिक स्तम्भ युक्त बरसाती तथा सोपान मार्ग है। क्योंकि पुष्करिणी कमल पुष्पों से सुशोभित है। इसलिए इसे "स्वर्ण-कमल सरोवर" भी कहते है। सरोवर के द० में 150 फीट ऊंचा गोपुरम है। जिससे सरोवर की सुन्दरता क्षीण पड़ गयी है। सरोवर में गोपुरम का प्रतिबिम्ब भी दर्शकों को आकर्षित करता है। स्वर्ण कमल सरोवर के उत्तर पूर्वी कोने में कुछ दूरी पर मीनाक्षी मन्दिर के सामने बाहरी परकोटे वाला एक विशाल गोपुरम है।

रामेश्वर मन्दिर - मदुरै काल का एक अन्य द्रविड़ मन्दिर रामेश्वर मन्दिर है। इस मन्दिर में दो देवालय है। जो एक तीन प्रचीरो से घिरा है। बाहरी दीवार 880 फीट लम्बी और 673 फीट चौड़ी है। और 673 फीट चौड़ी है। रामेश्वर मन्दिर का भव्य खण्ड इसका स्तम्भ युक्त गलियारा है। जिसकी लम्बाई 700 फीट है। मन्दिर की उंचाई 20 फीट है। जिसमें 17 वी० शताब्दी की सर्वोत्तम परम्परा के चार गोपुरम है।

III Unit (End)

Scanned with CamScanner

Unit - IV

Orrisson Period उड़ीसा (कलिंग) 8वी से 13वी शती ई०:-

भुवनेश्वर, कोणार्क, पुरी,-

सांस्कृतिक व राजनैतिक दृष्टि से उड़ीसा या कलिंग के इतिहास में 13वी शती के मध्य का समय महत्वपूर्ण रहा। यहां शैलोदभव, भौमकर, सोम तथा गंग वंश के शासकों ने राज्य किया। इसी समय के शासकों द्वारा उड़ीसा के विभिन्न भागों में बहुत बड़ी संख्या में मन्दिरों तथा मूर्तियों का निर्माण सम्पन्न हुआ। उड़ीसा में भुवनेश्वर स्थापत्य एवं मूर्तिकला का सबसे महत्वपूर्ण केन्द्र था

यहां बने अनेक मन्दिरों में 50 अभी सुरक्षित है। प्रारंभिक काल में शैलोदभव भव वंश के शासकों द्वारा भुवनेश्वर में परशुरामेश्वर तथा स्वर्ण जालेश्वर मन्दिरों का निर्माण हुआ शैलोदभव वंश के शासक शिव के उपासक थे किन्तु भौमकर वंश के शासक बौद्ध धर्मावलम्बी थे। अत: इनके काल में पाशुपत और बौद्ध धर्म का समन्वय हुआ।

950 ई० में सोमवंश के शासकों केरल में शैली का बदलाव आया इस अवधी मे भुवनेश्वर में मुक्तेश्वर, लिंगराज केदारेश्वर आदि मन्दिर बने। गंग वंश के शासकों ने पुरी के जगन्नाथ तथा कोणार्क के सूर्य मन्दिर का निर्माण हुआ। चालुक्य शासन की कला मन्दिरों की सरंचना का विकास हुआ। वह उड़ीसा में अपने चरमोत्कर्ष पर पहुंचा भुवनेश्वर के मन्दिरों में खण्डगिरी तथा उदय गिरि के खदान से प्रस्तर लाकर प्रयोग किया गया था।

श्रीमन्दिर - - - - - -

डा० पूर्णिमा वशिष्ठ
ललित कला विभाग